Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सत्यनारायणकथा हिन्दीटीकासमेता प्रारभ्यते

अस्य ग्रन्थस्य पुनर्मुद्रणाधिकाराः "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालयाध्यक्षाधीनाः सन्ति ।

(अधिकतम सूची मूल्य १ रुपया ५० पैसा मात्र.)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुद्रक व प्रकाशक : **मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास**, अध्यक्ष **श्रीवेंकटेश्वर** प्रेस, **खेमराज श्रीकृष्णदास**
मार्ग, बंवई–४००००४ के लिये डी० एस० शर्मा मैनेजर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्यनारायणव्रतसामग्री.

१ कदलीस्तम्भाः
२ आम्रपल्लवतोरणम्
३ पञ्चपल्लवाः
४ सुवर्णमूर्त्तिः
५ कलशः
६ यज्ञोपवीतम्
७ पञ्चरत्नानि
८ वस्त्रोपवस्त्रे
९ तण्डुलाः
१० कुंकुमम्
११ अबीरः
१२ गुलालः
१३ धूपः
१४ पुष्पाणि
१५ तुलसीदलानि

पूर्व

उत्तर

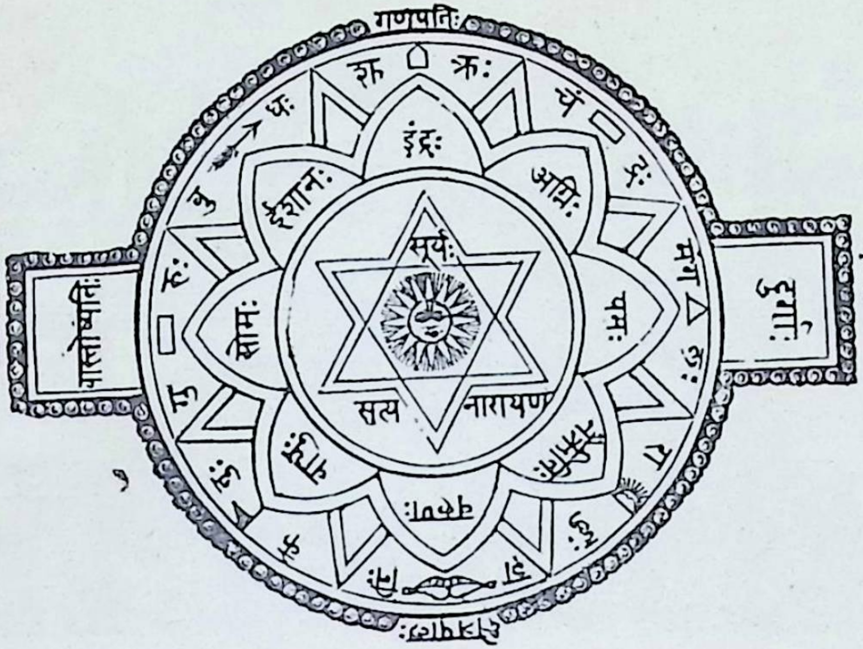

दक्षिण

पश्चिम

१६ नारिकेलफलम्
१७ ताम्बूलदलानि
१८ पूगीफलानि
१९ नानाफलानि
२० माला
२१ पञ्चामृतपदार्थाः (दुग्ध, दधि, घृत, मधु, शर्करा)
२२ पुण्याहवाचनकलशः
२३ भगवदर्थं पीठम्
२४ पीठम्
२५ रङ्गवल्ल्यर्थं रङ्गाः
२६ दक्षिणार्थं द्रव्यम्
२७ नैवेद्यार्थं प्रसादपदार्थाः
१। घृतं १। शर्करा
१। दुग्धं १। गोधूमचूर्णं,
१। कदलीफलानि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ सत्यनारायण कथा भाषा प्रारंभः । सबको प्रेरणा करनेवाले सविता देवता सुवर्णमय रथमें आरूढ होकर कृष्णवर्ण रात्रि लक्षणवाले अन्तरिक्ष मार्गमें पुनरावर्तन क्रमसे भ्रमण करते देवादि और मनुष्यादिको

श्रीगणेशायनमः ॥ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥१॥ सूर्याय नमः ॥

अपने अपने कार्योंमें लगाते हुये सम्पूर्ण भुवनोंको देखते हुए (सब लोकोंको प्रकाशित करते हुए) आगमन करते हैं ॥ १ ॥ इनकी पूजा करनी चाहिये । सूर्यान्तर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मैं आवाहन करता हूँ, और चन्दन, चावल, पुष्प, मिष्टान्न, दक्षिणादि समर्पित करता हूँ। इसी तरह सब ग्रहोंकी पूजा करे। ब्रह्माका यजमानोंके प्रति कथन—हे यजमानो! यह चन्द्रमा हम ब्राह्मणोंका राजा है, यह तुम्हारा भी राजा है। इसको देवता अपना

सूर्यमावाहयामि ॥ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ एवं सर्वत्र इमं देवाऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्त्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ॥ २ ॥ चन्द्राय नमः ॥

भ्राता समझते हैं ब्राह्मण इसको इडा नाडीके आश्रयसे महर्षि पदके लाभके लिये, क्षत्रिय बड़े भारी राज्य और क्षात्र धर्मके लिये, वैश्य व्यापारके लिये ब्रह्मा और ब्रह्माणी का पुत्र मानते हैं ॥ २ ॥ इससे चन्द्रमाकी पूजा करे ॥

॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रमाके प्रकाशक श्रीमन्नारायणको नमस्कार है। ये मण्डलमें स्थित अग्निरूप मंगल पृथ्वीका पालन करनेवाले, जलको और अनेक प्रकारके वीर्यको उत्पन्न करनेवाले प्रकाश रूप लोकके ऊपर स्थित है ॥३॥ मंगलके अन्तर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है। इससे मङ्गलकी पूजा करे। हे बुध देवता! हमारे यज्ञमें विघ्न दूर करनेके लिये चैतन्य होइये

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ आपाᳬरेताᳬसी जिन्वति ॥ ३ ॥ भौमाय नमः ॥ उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते सᳬसृजेथामयंच॥अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥४॥

चैतन्य होकर कृपा कीजिये, यह वापी कूप, तडागादि और यज्ञ हवन आपहीकी सहायतासे पूर्ण हुये हैं, इस यज्ञमें और फिर कभी भविष्यके यज्ञमें विश्वेदेव देवता यज्ञ करने वाले पर प्रसन्न हों ॥ ४ ॥ बुधके अन्तर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इससे बुधकी पूजा करे । हे सत्यसे उत्पन्न बृहस्पतिजी महाराज । श्रेष्ठ ब्राह्मण जिस ब्रह्म तेजको प्राप्त कर प्रकाशित और ज्ञान युक्त शोभित होते हैं, ऐसा दीप्ति युक्त ज्ञानोपेत

बुधाय नमः ॥ बृहस्पते अतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥
यद्दीदयच्छवसऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ५ ॥
बृहस्पतये नमः ॥

ब्रह्म; तेज रूपी धन हमारेमें स्थापित कीजिये ॥ ५ ॥ बृहस्पति अन्तर्यामी श्रीमन्नारायण को नमस्कार है; इससे बृहस्पतिजीकी पूजा करे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोकोंके स्वामी शुक्र देवताने अन्नसे निकले हुये रक्षा करनेवाले, दूधकी तरह धवल; अमृतको उत्पन्न करनेवाले रसका ब्रह्माजीसे पान किया । ऐसे सत्यको ग्रहण करनेवाली बुद्धि इन्द्रियको सत्यके द्वारा तमोगुण अन्धकारसे दूर करते हुये; देहको प्रकाश करनेवाले

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाऽव्यपिबत्क्षत्रंपयःसोमंप्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्य-मिन्द्रियं विपानᳫंशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतंमधु ॥६॥ शुक्राय नमः ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥७॥

शुक्ल वर्ण और प्रिय रूप शुक्र देवता को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥ शुक्रान्तर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है, इससे शुक्रका पूजन करे स्तुतिके योग्य शनैश्चर देवता हमारे मनवाञ्छित फलकी सिद्धिके लिये कल्याणकारी हों, और हमको सब ओरसे सुखी करें ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनैश्वर रूपधारी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है इससे शनैश्वरजीकी पूजा करे। सदा आनन्दसे बढता हुआ, सहायकारी अद्भुत वर्ण वाला राहु हमारा मित्र कैसे हो? इसका उत्तर इसीमें है. शुभ गुणोंमें वर्तमान रहनेसे प्राण वायु शक्तिसे तुम्हारा मित्र हो, कृपा

शनैश्वराय नमः ॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ ८ ॥ राहवे नमः ॥ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः ॥ ९ ॥

करनेवाला हो ॥ ८ ॥ ऐसे राहुके स्वरूपधारी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है इससे राहुकी पूजा करे। हे मनुष्यो! यदि तुम केतु देवताको अज्ञानी समझोगे तो केतु तुमको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रात दिन दाहक रूपी किरणोंसे जलायेगा, इस हेतु इसको प्रणाम करो ॥ ९ ॥ केतुके अन्तर्यामी श्रीमन्नारायणके लिये नमस्कार है, इससे केतुकी पूजा करे ॥

केतवे नमः ॥ गणानां त्वा इत्यनेन गणेशं पूजयेत ॥ १० ॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचा वेनऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमा अस्य विष्ठाःसतश्च योनिमसतश्चविवः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ११ ॥

"गणानांत्वा इस मन्त्रसे गणेशजीकी पूजा करे ॥ १० ॥ "ब्रह्म जज्ञानं" इस मन्त्रसे ब्रह्माजीकी पूजा करे ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे तिर्यक् वंश चीर ! तुम इस यज्ञिय मण्डपके ललाट स्थानीय हो, हे रराट । तुम हविर्धान
स० ना० मण्डपके श्रेष्ठ सन्धि रूप हो । हे बृहत्सूचि ! तुम यज्ञिय मण्डपके सूचि रूप हो । हे पू०
॥ ४ ॥ रज्जु ग्रन्थे ! तुम विष्णु हविर्धानकी ग्रन्थि हो । हे हविर्धान ! तुम विष्णु देवताके सम्बन्धि
हो इसलिये विष्णु भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये तुम्हारी स्तुति अथवा स्पर्श करता
विष्णो रराटमसि ठ्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्ण-
वमसि ठ्विष्णवे त्वा ॥१२॥ विष्णवे नमः ॥ नमः शंभवाय च मयोभवाय
च नमःशंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥१३॥
हूँ ॥ १२ ॥ सब लोकोंके कल्याणकारी सुख रूप; संसार रूप और मुक्ति रूपके निमित्त
नमस्कार है; संसारिक सुख और पारलौकिक मोक्ष सुख करनेवाले के निमित्त नमस्कार ॥ ४ ॥
है । कल्याण रूप निष्पापके निमित्ति भक्तोंके अत्यन्त कल्याणकारक तथा निष्पाप
करनेवालेके निमित्त नमस्कार है ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इससे महादेवके अन्तर्यामी श्रीमन्नारायणकी पूजा करे। स्वप्रकाश स्वरूप! श्री जिसके द्वारा सम्पूर्ण जन आश्रणीय होते हैं' और सौन्दर्यरूप लक्ष्मी आपकी स्त्री स्थानीय हैं' और दिन रात पार्श्वस्थानीय (पासवाडे) हैं, आकाशमें स्थित नक्षत्र आपके रूप हैं, कारण कि आपके ही तेजसे प्रकाशित हैं; आकाश और पृथ्वी आपके मुख स्थानमें व्याप्त हैं।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् इष्णन्निषाणामुंमऽइषाण सर्वलोकंमऽइषाण ॥ १४ ॥ लक्ष्म्यै नमः ॥ अथ सत्यनारायणपूजाविधिः व्रती ॥ संक्रांतौ पौर्णमास्यां च दशम्यां यस्मिन्कस्मिन्दिने वा सायंकाले स्नानं कृत्वा पूजास्थानमागत्य आसने

कर्म फलकी इच्छा करते इच्छा करो, मेरे लिये परलोक समीचीन हो, मैं सब लोकात्मक हो जाऊँ, अर्थात् मुक्त हो जाऊँ, ऐसी मेरे लिये इच्छा करो। इससे लक्ष्मीके अन्तर्यामी श्रीमन्नारायणकी पूजा करे, लक्ष्मीजीको नमस्कार है ॥ १४ ॥ अब सत्य नारायण पूजाकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधि लिखते हैं । व्रत करनेवाला संक्रान्तिं, पूर्णमासी, दशमी अथवा जिस किसी दिन सायंकालमें स्नान करके पूजाके स्थानमें आकर आसन पर बैठकर, आचमन कर पवित्री धारण करके गणेश गौरी वरुण इत्यादि देवताओंकी प्रतिष्ठा आवाहन

उपविश्याचम्य पवित्रधारणं कृत्वा गणेशगौरीवरुणदेवतानां प्रतिष्ठावाहनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि० अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं सकलदुरितोपशमनसर्वापच्छांतिपूर्वकसकलमनोरथसिद्ध्यर्थं यथासंपादितसामग्र्या गणेशगौरीवरुणदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालदेवतासूर्यादिनवग्रहदेवतापूजनपूर्वकं पूर्वांगीकृतं श्रीसत्यनारायणपूजनं कथा श्रवणं च

करके संकल्प करे । आज इस गोत्रका यह नाम वाला मैं सब पापोंके उपशमन, सब आपत्तिशांति पूर्वक सकल मनोरथ सिद्धिके लिये यथा संपादित सामग्रीसे गणेश गौरी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरुण देवता, गणपति इत्यादि पञ्चलोकपाल देवता, सूर्यादि नवग्रह देवता पूर्वक पहिले कहे हुये सत्यनारायणके व्रतमें पूजन और कथा श्रवण करूंगा, ऐसे संकल्प करें। गणेशादि देवताओंको नमस्कार है, अर्घ्य, पाद्य, आचमनीय, स्नान, चन्दन, चावल,

करिष्ये ॥ गणेशादिभ्यो नमः ॥ अर्घ्यपाद्याचमनीयस्नानगंधाक्षतपुष्पधूप-
दीपनैवेद्याचमनीयमुखवासतांबूलपूगीफलद्रव्याणि तत्तन्मंत्रैः समर्पयामि
एवं सूर्यादिग्रहाणां तत्तन्मंत्रैः पूजनं कुर्यात् ॥ अथ सत्यनारायणपूजनप्र-
कारमाह ॥ पुष्पं गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात् ध्यायेत्सत्यं गुणातीतं गुणत्रय

पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमनीय जल, मुखको सुगन्धदायक ताम्बूल सुपारी, दक्षिणा, इन सबको इनके मन्त्रोंसे समर्पण करे। इस तरह सूर्यादि ग्रहोंकी जिनके जो मन्त्र हैं, उनसे पूजन करे। अब सत्यनारायणकी पूजाका प्रकार वर्णन करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्प हाथमें लेकर ध्यान करे। सत्य स्वरूप, गुणोंसे अतीत, तीनों गुणों सहित लोकोंके स्वामी, त्रिलोकीके स्वामी, कौस्तुभ मणि धारण करनेवाले ॥ १ ॥ नीलवर्ण, पीतांबर धारी, लक्ष्मी और भृगुलतासे अलंकृति वक्षस्थल वाले, गोविन्द,

समन्वितम् ॥ लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम् ॥ १ ॥ नीलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपदभूषितम् ॥ गोविंदं गोकुलानन्दं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम् ॥ २ ॥ इति ध्यानम् ॥ व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय हृषीकपतये नमः मया निवेदिता भक्त्या अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥ इत्यर्घ्यम् ॥

गोकुलके आनन्द, ब्रह्मादिकोंसे पूजित श्रीहरिका ध्यान करे ॥ २ ॥ यह ध्यान समाप्त हुआ ॥ प्रगट अप्रगट रूपवाले, इंद्रियोंके स्वामीको नमस्कार है, मेरे द्वारा भक्ति पूर्वक निवेदित अर्घ्यको ग्रहण कीजिये ॥ ३ ॥ इससे अर्घ्य समर्पण करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे नारायण ! नरक रूपी समुद्रसे तारनेवाले आपको नमस्कार है, हे देवोंके स्वामी ! यह पाद्य ग्रहण कीजिये और मेरे सुखको बढाइये ॥ ४ ॥ यह पाद्य है ॥ सब पापोंको हरनेवाला श्रीगङ्गाजीका शुभ जल आपके लिये है, हे देव ! इससे आप भली प्रकारसे आचमन

नारायण नमस्तेऽस्तुनरकार्णवतारक ॥ पाद्यंगृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥ ४ ॥ इति पाद्यम् ॥ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ॥ तदिदं कल्पितं देव सम्यगाचम्यतां त्वया ॥ ५ ॥ इत्याचमनीयम् ॥ स्नानं पञ्चामृतैर्देव गृहाण पुरुषोत्तम ॥ अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणप्रणतिप्रिय ॥६॥ इति स्नानम् ॥ वेदसूक्तसमायुक्तेयज्ञसामसमन्विते ॥ सर्ववर्णप्रदे देव वाससी

कीजिये ॥ ५ ॥ यह आचमनीय है ॥ हे पुरुषोत्तम ! हे अनाथोंके नाथ ! हे सर्वज्ञ ! हे देवताओंके नमस्कारसे प्रसन्न होनेवाले ! इस पञ्चामृतसे स्नान कीजिये ॥६॥ यह स्नान हुआ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदके सूक्त सहित, यज्ञ सामसे युक्त सर्व वर्णके देनेवाले मेरे दिये हुये वस्त्रोंको ग्रहण कीजिये ॥ ७ ॥ इससे वस्त्र निवेदन करे ॥ ब्रह्मा, विष्णु महादेव, इनसे निर्मित ब्रह्म सूत्र यज्ञोपवीतके दानसे भगवान् लक्ष्मीपति प्रसन्न होवें ॥ ८ ॥ यह जनेऊका मन्त्र है ॥ हे

प्रतिगृह्यताम् ॥ ७ ॥ इति वस्त्रम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशैर्यन्निर्मितं ब्रह्मसूत्रकम् ॥ यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां कमलापतिः ॥ ८ ॥ इति यज्ञोपवीतम् । श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुर श्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ९ ॥ इति चंदनम् ॥ मल्लिकादिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मया हृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ १० ॥ इति पुष्पाणि ॥

सुरश्रेष्ठ ! श्रीखण्ड, चन्दन, दिव्य सुगन्ध सहित सुन्दर मनोहर चन्दनको ग्रहण कीजिये ॥९॥ यह चन्दनका मन्त्र है ॥ हे प्रभो ! चमेली, मालती आदिके सुगन्धित फूल पूजाके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिये मैं लाया हूँ, इनको ग्रहण कीजिये ॥ १० ॥ यह पुष्प चढ़ानेका मन्त्र है ॥ वनस्पतियोंके रससे उत्पन्न सुगन्धित, उत्तम गन्धवाले सब देवताओंके सूंघने योग्य इस धूपको ग्रहण कीजिये ॥ ११ ॥ यह धूपका मन्त्र है। हे त्रिलोकीके अन्धकारका

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ११ ॥ इति धूपम् ॥ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥ १२ ॥ इति दीपम् ॥ घृत-पक्वं हविष्यान्नं पायसं च सशर्करम् ॥ नानाविधं च नैवेद्यं विष्णो मे प्रति गृह्यताम् ॥ १३ ॥ इति नैवेद्यम् ॥

नाश करने वाले घृत व बत्ती सहित, अग्निसे जगाये इस दीपकको स्वीकार कीजिये ॥ १२ ॥ यह दीपक का मन्त्र है ॥ हे विष्णो ! घृतमें पकाये हुये, हविष्यान्न खीर,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शक्कर सहित नाना प्रकारके नैवेद्यको आप ग्रहण कीजिये ॥ १३ ॥ यह नैवेद्यका मन्त्र है
हे पुरुषोत्तम ! सब पापोंको हरने वाले, दिव्य, निर्मल गङ्गाजीके जलको आप आचमनके
लिये ग्रहण कीजिये ॥ १४ ॥ यह आचमनका मन्त्र है ॥ हे देवेश ! लवंग और कपूरसे

सर्वपापहरं दिव्यं गांगेयं निर्मलम् जलम् ॥ आचमनं मया दत्तं गृह्यतां पुरुषोत्तम ॥ १४ ॥ इत्याचमनम् ॥ लवंगकर्पूरयुतं ताबूलं सुरपूजितम् प्रीत्या गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्द्धय ॥ १५ ॥ इति तांबूलम् ॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १६ ॥ इति फलम् ॥

युक्त, देवताओंसे पूजित ताम्बूलको प्रीति पूर्वक ग्रहण कीजिये, और मेरे सुखको
बढाइये ॥१५॥ यह ताम्बूलका मन्त्र है ॥ हे देव ! यह फल मैंने आपके सामने रखा है,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इससे मुझको जन्म जन्ममें सुफलकी प्राप्ति हो ॥१६॥ यह फलका मन्त्र है ॥ चार वत्ती वाली, घीसे पूरित आरतीसे जगत्के पति सन्तुष्ट होते ही हैं ॥ १७ ॥ यह आरतीका

चतुर्वर्तिसमायुक्तं घृतेन च सुपूरितम् ॥ नीराजनेन सन्तुष्टो भवत्वेव जगत्पतिः ॥ १७ ॥ इति नीराजनम् ॥ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि च ॥ तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १८ ॥ इति प्रदक्षिणा ॥ ततः पुष्पांजलिं नमस्कारांश्च कृत्वा स्तुवीत ॥ यन्मया भक्तियुक्तेन पत्रं पुष्पं फलम् जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकंपया ॥१९॥

मन्त्र है ॥ जन्मान्तरमें किये जो कोई पाप हैं, वे आपकी परिक्रमा करनेमें एक एक पांव रखनेमें नष्ट होते हैं १८ ॥ इस मन्त्रसे प्रदक्षिणा करे ॥ उसके बाद पुष्पाञ्जलि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्कार करके स्तुति करे। हे सत्यनारायण भक्ति पूर्वक जो पत्र, पुष्प, फल, जल आपको मैंने समर्पण किये हैं, आप कृपा करके उनको ग्रहण कीजिये ॥१९॥ हे जनार्दन मन्त्र; क्रिया और भक्ति हीन जो पूजा मैंने की है, वह सम्पूर्ण हो ॥ २० ॥ अमोघ,

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २० ॥ अमोघं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम् ॥ हृषीकेशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम् ॥ २१ ॥ गुणत्रयं गुणातीतं गोविन्दं गरुड-ध्वजम् ॥ जनार्दनं जनातीतं जानकीवल्लभं हरिम् ॥ २२ ॥

कमलके समान नेत्रवाले, नृसिंह, दैत्योंको मारने वाले, इंद्रियोंके स्वामी, जगत्के स्वामी वर देनेवाले ॥२१॥ त्रिगुणात्म स्वरूप वाले, तीनों गुणोंसे परे, गौओंकी रक्षा करनेवाले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गरुड ध्वज जनार्दन, मनुष्योंसे विलक्षण, जानकीके पति, दुःख हरने वाले ॥ २२ ॥
भगवान् नारायणको सदा भक्ति पूर्वक मैं प्रणाम करता हूं, दुर्गममें, विषममें घोर स्थानमें
शत्रुओंसे परिपीडनमें ॥ २३ ॥ सब अनिष्ट भयोंमें आप मेरा उद्धार कीजिये । इन

प्रणमामि सदा भक्त्या नारायणमतः परम् ॥ दुर्गमे विषमे घोरे शत्रुभिः
परिपीडिते ॥ २३ ॥ निस्तारयस्व सर्वेषु तथानिष्ठभयेषु च ॥ नामान्येतानि
संकीर्त्य ईप्सितं फलमाप्नुयात् ॥ २४ ॥ सत्यनारायणं देवं वन्देऽहंकामदं
प्रभुम् ॥ लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमोनमः ॥ २५ ॥ इति प्रार्थना

नामोंके उच्चारणसे मन वांछित फलकी प्राप्ति होती है ॥ २४ ॥ कामनाओंके देने वाले
यह प्रभु सत्यनारायण देवको मैं नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने लीलासे विश्व रचा है, उन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवान् को मेरा नमस्कार है ॥ २९ ॥ यह प्रार्थना हुई अब कथाका प्रारम्भ करते हैं।
व्यासजी बोले-एक समय मननशील शौनकादिक सब ऋषियोंने पुराणवक्ता सूतजीसे
निश्चय पूर्वक पूछा ॥ १ ॥ ऋषि-बोले व्रतसे, तपस्यासे क्या वाञ्छित फल होता है, हे

अथ कथा ॥ व्यास उवाच ॥ एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः
पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु ॥१॥ ऋषय ऊचुः ॥ व्रतेन तपसा
किं वा प्राप्यते वांछितं फलम् ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महा-
मुने ॥ २ ॥ सूत उवाच ॥ नारदेनैव संपृष्टो भगवान्कमलापतिः ॥ सुरर्षय
यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः ॥ ३ ॥

महामुने ! हम सब सुननेकी इच्छा करते हैं, आप कहिये ॥ २ ॥ सूतजी बोले कि-नारदजी
के द्वारा पूछे जाने पर भगवान् कमलापतिने जो कहा, उसे आप सावधान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होकर सुनिये ॥ ३ ॥ एक समय नारद मुनि परोपकारकी इच्छासे अनेक लोकोंमें भ्रमण करते हुये मनुष्य लोकमें आये ॥ ४ ॥ और अनेक प्रकारके दुःखोंसे पीडित, अनेक प्रकारकी योनियोंमें उत्पन्न, अपने कर्मोंसे दुःखी मनुष्योंको देखकर ॥ ५ ॥ "किस

एकदा नारदो योगी परानुग्रहकांक्षया ॥ पर्यटन्विविधाँल्लोकान्मर्त्यलोक-
मुपागतः ॥४॥ ततो दृष्ट्वा जनान्सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान् ॥ नानायोनि
समुत्पान्नान् क्लिश्यमानान्स्वकर्मभिः ॥५॥ केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो
भवेद्ध्रुवम् ॥ इति संचिन्त्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा ॥ ६ ॥ तत्र नारा-
यणंदेवं शुक्लवर्णंचतुर्भुजम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितम् ॥ ७ ॥

उपायसे इन जीवोंका दुःख नाश हो" ऐसा विचार करके विष्णु लोकमें गये ॥ ६ ॥ वहां विष्णुलोकमें शुक्लवर्णवाले, चतुर्भुज, शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, और वन मालासे शोभित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नारायण देवको ॥ ७ ॥ देखकर स्तुति करने लगे । नारदजी बोले-वाणी और मनसे नहीं जाने जाये रूपवाले, अनन्त शक्तिधारी श्री हरिको नमस्कार है ॥ ८ ॥ आदि, मध्य और अन्त रहित, निर्गुण, सब गुणोंके आत्मा, सबके आदि कारण, भक्तोंकी पीडाके

दृष्ट्वा तं देवदेवेशंस्तोतुं समुपचक्रमे ॥ नारद उवाच ॥ नमोवाङ्मनसातीतरूपायानंतशक्तये ॥ ८ ॥ आदिमध्यांतहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥ सर्वेषामादिभूताय भक्तानामार्तिनाशिने॥९॥श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत॥श्रीभगवानुवाच॥ किमर्थमागतोऽसि त्वं किंते मनसि वर्तते ॥ १० ॥

नाशक भगवान्‌को नमस्कार है ॥ ९ ॥ भगवान् श्री विष्णु नारदजीकी स्तुति सुन कर बोले कि हे नारदजी ! आप किस लिये आये हैं, और आपके मनमें क्या है ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हेमहाभाग ! वह सब कहिये, तो फिर मैं भी आपसे कहूँ। तब नारदजी बोले कि–मनुष्य लोकमें अनेक योनियोंमें उत्पन्न, अनेक प्रकारके दुःखोंसे पीडित सब मनुष्य पापकर्मोंसे पक रहे हैं ॥ ११ ॥ इस लिये हे नाथ ! उनके पापोंका नाश कैसे हो ? ऐसा कोई लघु

कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथायामि ते ॥ नारद उवाच ॥ मर्त्यलोके जनाः सर्वे नानाक्लेशसमन्विताः ॥ नानायोनिसमुत्पन्नाः पच्यन्ते पापकर्मभिः ॥ ११ ॥ तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद्वद ॥ श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं कृपास्ति यदि ते मयि ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया वत्स लोकानुग्रहकांक्षया ॥ यत्कृत्वा मुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामि ते ॥ १३ ॥

उपाय कहिये, यदि आपकी मुझपर कृपा है, तो मैं सुनना चाहता हूँ ॥१२॥ श्रीभगवान् बोले कि हे वत्स ! लोक के अनुग्रह की इच्छासे तुमने बहुत अच्छी बात पूछी है, जिसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करने से मनुष्य मोहसे दुःखसे छूट जाता है, वह मैं तुमसे कहता हूँ सुनो ॥ १३ ॥
हे वत्स ! स्वर्गमें और मनुष्यलोकमें एक महापुण्य दायक दुर्लभ व्रत है, उसको मैं अब
तुम्हारे स्नेहके कारण कहता हूँ ॥ १४ ॥ सत्य नारायणके व्रतको विधान पूर्वक ठीक

व्रतमस्ति महत्पुण्यं स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभम् ॥ तव स्नेहान्मया वत्स
प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥ १४ ॥ सत्यनारायणस्यैवं व्रतं सम्यग्विधानतः ॥
कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वा
भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत् ॥ नारद उवाच ॥ किं फलं किं विधानं
च कृतं केनैव तद्व्रतम् ॥ १६ ॥

तरहसे करके जल्दी अत्यन्त सुखका भोग करके परलोकमें मोक्षको प्राप्त करे ॥ १५ ॥
श्री भगवान् के वाक्यको सुनकर नारद मुनि बोले कि इस व्रतका क्या फल है, क्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधान है, और यह व्रत किसने किया है ॥ १६ ॥ यह व्रत कब किया जाता है, यह सब विस्तार पूर्वक कहिये, तब श्रीभगवान् बोले कि दुःख शोक इत्यादिक। नाश करनेवाले, धन धान्यको बढ़ानेवाले, सौभाग्य देनेवाले, सन्तान उत्पन्न करनेवाले, सब जगह विजय

तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं हि तद्व्रतम् ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दुःख-शोकादिशमनंधनधान्यप्रवर्द्धनम् ॥ १७ ॥ सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वत्रविजयप्रदम्॥यस्मिन्कस्मिन्दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः॥१८॥सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे ॥ ब्राह्मणैर्बान्धवैश्चैव सहितो धर्मतत्परः ॥१९॥

देनेवाले, सत्यनारायण देवका धर्ममें तत्पर प्राणी जिस किसी दिन भक्ति और श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों और बान्धवों सहित सायंकालमें पूजन करे ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्तम खाने योग्य सवासेर नैवेद्य भक्ति पूर्वक दे, केलेके फल; घृत, दूध, गेहूँका चूर्ण ॥ २० ॥ यदि गेहूंके चूर्ण न हो तो शालीका चूर्ण शक्कर अथवा गुड, इन सब पदार्थोंको इकट्ठा करके सवासेर नैवेद्य समर्पण करे ॥ २१ ॥ सब मनुष्योंको बुलाकर कथा सुने,

नैवेद्यं भक्तितो दद्यात्सपादं भक्ष्यमुत्तमम् ॥ रंभाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्॥२०॥ अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा॥सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ॥२१॥ विप्राय दक्षिणां दद्यात्कथां श्रुत्वाजनैः सह॥ततश्चबन्धुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत्॥२२॥ प्रसादं भक्षयेद्भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत् ॥ ततश्च स्वगृहं गच्छेत्सत्यनारायणं स्मरन् ॥२३॥

ब्राह्मणोंको दक्षिणा दे, और बादमें बन्धु बान्धवों सहित ब्राह्मणोंको भोजन कराये ॥२२॥ भक्ति पूर्वक प्रसाद ग्रहण करे, नृत्य गीतादिक कराये, और उसके बाद, सत्यनारायणको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्मरण करते हुए अपने घरको जाये ॥ २३ ॥ ऐसा करनेसे मनुष्योंकी मनः कामना निश्चय पूर्वक पूर्ण होगी, विशेष करके कलियुगमें पृथ्वीतल पर यह लघु उपाय है॥२४॥ इति श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गत रेवाखण्डोक्त सत्यनारायणकथामें प्रथम अध्याय सम्पूर्ण

एवंकृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ विशेषतः कलियुगे लघूपायोऽस्ति भूतले ॥ २४ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणकथायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूत उवाच ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विज ॥ कश्चित् काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोऽतिनिर्धनः ॥ १ ॥

हुआ ॥ १ ॥ सूतजी बोले-हे शौनकादिक ऋषीश्वरो ! हम और वर्णन करते हैं जिसने यह व्रत पहिले किया उसका वृत्तान्त कहते हैं। अति रमणीय काशीपुरीमें कोई एक अति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निर्धन ब्राह्मण था ॥ १ ॥ भूख प्याससे व्याकुल होकर नित्य पृथ्वीपर घूमता फिरता था, ब्राह्मणोंको चाहनेवाले भगवान् ने ब्राह्मणको दुखी देखकर ॥ २ ॥ वृद्ध ब्राह्मणका रूप धारण करके उस ब्राह्मणको आदर पूर्वक पूछा, हे विप्र ! तुम नित्य क्यों दुःखी होकर

क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले ॥ दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान्ब्राह्मणप्रियः ॥ २ ॥ वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात् ॥ किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः ॥ ३ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ ब्राह्मणोऽति दरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम् ॥ ४ ॥

पृथ्वी पर घूमते हो ॥ ३ ॥ वह सब हमारी सुननेकी इच्छा है, अतः हे द्विजोंमें श्रेष्ठ ! आप कहिये । तब ब्राह्मण बोला, कि मैं अति दरिद्र ब्राह्मण हूँ, और भिक्षाके लिये पृथ्वीपर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घूमता फिरता हूँ ॥ ४ ॥ हे प्रभो ! यदि दरिद्रताको मिटानेका उपाय आप जानते हों, तो कृपा करके कहिये। तब वृद्ध ब्राह्मण बोला कि सत्यनारायण विष्णु भगवान् मन वाञ्छित फलको देने वाले हैं ॥ ५ ॥ अतः हे विप्र ! उनका व्रत और पूजन तुम करो,

उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो ॥ वृद्धब्राह्मण उवाच ॥ सत्य-नारायणो विष्णुर्वाञ्छितार्थफलप्रदः ॥ ५ ॥ तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम् ॥ यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥ ६ ॥ विधानं च व्रतस्यापिविप्रायाभाष्य यत्नतः ॥ सत्यनारायणो वृद्धस्तत्रैवान्तर-धीयत ॥ ७ ॥

जिस व्रतके करनेसे मनुष्य सब दुःखोंसे छूट जाता है ॥ ६ ॥ व्रतका विधान भी यत्न पूर्वक ब्राह्मणको कहकर वृद्ध ब्राह्मण रूप धारी सत्यनारायण भगवान् वहीं अन्तर्धान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो गये ॥ ७ ॥ उसके बाद "वृद्ध ब्राह्मणने जो व्रत कहा है, उसे मैं करूँगा," ऐसा विचार करके उस ब्राह्मणको रात्रिमें निद्रा नहीं आई ॥ ८ ॥ और वह ब्राह्मण प्रातः-काल उठकर "मैं सत्यनारायणका व्रत करूँगा" ऐसा संकल्प करके भिक्षाके लिये

तद्व्रतं संकरिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै॥इति संचिंत्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान् ॥ ८ ॥ ततः प्रातः समुत्थाय सत्यनारायणव्रतम् ॥ करिष्य इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद् द्विजः ॥ ९ ॥ तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् ॥ तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरेत् ॥ १० ॥

गया ॥ ९ ॥ उसी दिन ब्राह्मणको बहुत धन प्राप्त हुआ, और उसी धनसे उसने बन्धु बान्धवों सहित सत्यनारायणका व्रत किया ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस व्रतके प्रभावसे वह ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ सब दुःखोंसे छूट गया, और उसके सब सम्पदा हो गई ॥११॥ उसी दिनसे उसने प्रत्येक महीने सत्यनारायणका व्रत किया, ऐसे सत्यनारायणका व्रत करके वह ब्राह्मणोत्तम ॥ १२ ॥ सब पापोंसे छूटकर दुर्लभ मोक्षको प्राप्त

सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसंपत्समन्वितः ॥ बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥११॥ ततः प्रभृति कालं च मासि मासि व्रतं कृतम् ॥ एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः ॥१२॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान् ॥ व्रतमस्य यदा विप्राः पृथिव्यां संकरिष्यति ॥१३॥ तदैव सर्वदुःखं तु मनुजस्य विनश्यति ॥ एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने ॥ १४ ॥

हुआ, हे विप्रो ! जब इस व्रतको पृथ्वीपर कोई करेगा ॥ १३ ॥ तभी मनुष्यके सब दुःख नष्ट होंगे, ऐसे श्रीमन्नारायणने महात्मा नारदजीसे कहा ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ब्राह्मणो ! वही मैंने आपसे कहा, और क्या कहूँ । तब ऋषि बोले कि हे मुने ! उस ब्राह्मणसे सुनकर यह व्रत पृथ्वीपर किसने किया; यह हमारी सुननेकी इच्छा है ॥१५॥ सूतजी बोले कि हे मुनियो ! जिसने यह व्रत पृथ्वीपर किया है, उसको सुनो । एक

मया तत्कथितं विप्राः किमन्यत्कथयामि वः ॥ ऋषयः ऊचुः ॥ तस्माद्विप्राच्छ्रुतं केन पृथिव्यां चरितं मुने ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धाऽस्माकं प्रजायते ॥ १५ ॥ सूत उवाच ॥ शृणुध्वं मुनयःसर्वे व्रतं येन कृतं भुवि ॥ एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः ॥ १६ ॥ बन्धुभिः स्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः ॥ एतस्मिन्नंतरे काले काष्ठक्रेता समागमत् ॥ १७ ॥

दिन वह ब्राह्मण अपने धनके विस्तारसे ॥ १६ ॥ बन्धु बान्धवों सहित व्रत करनेको उद्यत हुआ, उसी समय कोई लकडी बेचने वाला वहाँ आया ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लकडीका बोझा बाहर रख कर ब्राह्मणके घरमें गया, और तृष्णासे पीडितात्मा वह व्रत करते हुये ब्राह्मणको देखकर ॥ १८ ॥ प्रणाम करके ब्राह्मणसे बोला कि, आप यह क्या करते हैं ? हे प्रभो ! इसके करनेसे क्या फल मिलता है ? वह मुझसे कहिये ॥१९॥ वह ब्राह्मण

बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ॥तृष्णया पीडितात्मा च दृष्ट्वा विप्रं कृतव्रतम्॥१८॥प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया ॥ कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद्वद मे प्रभो॥१९॥विप्र उवाच ॥ सत्यनारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम् ॥ तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत् ॥ २० ॥

बोला कि, सभी मनवाञ्छित फल देने वाला यह सत्यनारायणका व्रत है, इसकी कृपासे मेरे ये धन धान्यादिक हैं ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उनसे इस व्रतको जानकर वह लकडी बेचने वाला बडा प्रसन्न हुआ, प्रसाद पाकर जल पीकर अपने घरको चला आया ॥ २१ ॥ सत्यनारायण देवका मनसे चिन्तवन किया कि गांवमें लकडी बेचनेसे जो धन मिलेगा ॥ २२ ॥ उसीसे सत्यनारायणका यह उत्तम व्रत

तस्मादेतद्व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेताऽतिहर्षितः ॥ पापौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ ॥२१॥ सत्यनारायणंदेवं मनसा इत्यचिंतयत् ॥ काष्ठंविक्रयतो ग्रामे प्राप्यते चाद्य यद्धनम् ॥२२॥ तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम् इति संचिन्त्य मनसा काष्ठं धृत्वा तु मस्तके ॥ २३ ॥ जगामनगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः ॥ तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ ॥२४॥

करूँगा, ऐसे मनमें विचार करके लकडीका बोझा सिरपर रखकर ॥ २३ ॥ जहां धनी लोग रहते हैं, ऐसे सुन्दर नगरमें गया । उस दिन लकड़ी बेचनेसे दुगुना मूल्य उसे प्राप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुआ॥२४॥ उसके बाद प्रसन्न हृदय वह सुन्दर पके हुये केलेके फल शक्कर, घी, दूध, गेहूँ का आटा ॥ २५ ॥ इन सबको सवा सेर इकट्ठा करके अपने घर चला आया। बादमें भाई बन्धुओंको बुलाकर बडी विधिसे व्रत किया ॥ २६ ॥ इसी व्रतके प्रभावसे धन पुत्र

ततः प्रसन्नहृदयः सुपक्वं कदलीफलम् ॥ शर्कराघृतदुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम् ॥२५ कृत्वैकत्र सपादं च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ ॥ ततो बन्धून् समाहूय चकार विधिना व्रतम् ॥ २६ ॥ तद्व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इह लोकेसुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ ॥ २७ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

वाला होगया, इस लोकमें सुख भोगकरके अन्तमें सत्यनारायणके लोकको प्राप्त हुआ ॥२७॥ इतिश्रीस्कन्दपुराणान्तर्गत रेवाखण्डोक्त सत्यनारायणकथामें द्वितीय अध्याय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समाप्त हुआ ॥ २ ॥ सूतजी बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ! फिर आगे कहते हैं, कि पहिले एक उल्का मुख नामक बडा बुद्धिमान् राजा था ॥ १ ॥ जितेन्द्रिय, सत्य बोलने वाला, बुद्धिमान् वह प्रतिदिन देवालयमें जाता और धन देकर ब्राह्मणोंको प्रसन्न करता था ॥२॥

सूत उवाच ॥ पुनरग्रे प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः ॥ पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः ॥ १॥ जितेन्द्रियःसत्यवादी ययौ देवालयंप्रति दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान्संतोषयन्सुधीः ॥२॥ भार्यातस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती॥भद्रशीलानदीतीरे सत्यस्य व्रतमाचरत्॥३॥ एतस्मिन्नन्तरे तत्र साधुरेकः समागतः ॥ वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः ॥४॥

उसकी कमलके समान मुखवाली, प्रमुग्धा साध्वी स्त्री, उन दोनोंने भद्रशीला नदीके किनारे पर सत्यनारायणका व्रत किया॥३॥ उसी समय बहुतसे धनसे परिपूरित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक साधु नामक वैश्य वाणिज्यके लिये वहां आया ॥ ४ ॥ वहां तीरपर नाव खड़ी करके राजाके पास आया, राजाको व्रती देखकर विनती करके पूछा ॥५॥ साधु वैश्य बोला कि, हे राजन् ! भक्तियुक्त चित्तसे आप यह क्या करते हैं ? यह सब मुझको कहिये, इस समय

नावं संस्थाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति ॥ दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं प्रपच्छ विनयान्वितः ॥ ५ ॥ साधुरुवाच ॥ किमिदं कुरुषे राजन्भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ॥ ६ ॥ राजोवाच पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः ॥ व्रतं च स्वजनैः सार्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया ॥ ७ ॥

मेरी सुननेकी इच्छा है ॥ ६ ॥ राजा बोले कि, हे साधु वैश्य ! पुत्रादि प्राप्तिकी कामनासे बन्धु बान्धवोंके सहित अतुल तेजस्वी भगवान् सत्यनारायण व्रत और पूजन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करते हैं ॥ ७ ॥ राजाके वचन सुनकर साधु वैश्य बड़े आदरसे बोला कि, हे राजन्! यह सब आप मुझको कहिये; जो आप कहेंगे वह सब मैं करूँगा ॥ ८ ॥ मेरे भी सन्तान नहीं है, इस व्रतसे निश्चय है कि मेरे सन्तान होगी। तब बादमें व्यापारसे लौटकर महा-

भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम् ॥ सर्वं कथय मे राजन्करि-
ष्येऽहं तवोदितम् ॥ ८ ॥ ममापि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम् ॥
ततो निवृत्त्य वाणिज्यात्सानंदो गृहमागतः ॥ ९ ॥ भार्यायै कथितं सर्वं
व्रतं संततिदायकम् ॥ तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत् ॥१०॥

आनंदित हो घरमें आया ॥ ९ ॥ सन्तान देनेवाले उस व्रतको अपनी स्त्रीसे कहा, बोलाकि यह व्रत मैं तब करूँगा, जब मेरे सन्तान होगी ॥ १० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐसे अतिश्रेष्ठ वह साधु वैश्य अपनी स्त्री लीलावतीको बोला । पतिव्रता उसकी स्त्री लीलावती एक दिन ॥ ११ ॥ पति सहित आनंदित संसारियोंकी तरह सत्यनारायणकी कृपासे गर्भवती हुई ॥ १२ ॥ दशवें महीनेमें उसके कन्यारूप रत्न उत्पन्न हुआ, जैसे

इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः ॥ एकस्मिन्दिवसे तस्यभार्या लीलावती सती ॥ ११ ॥ भर्तृयुक्तानन्दचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा ॥ गर्भिणी साभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः ॥ १२ ॥ दशमे मासि वै तस्याः कन्या रत्नमजायत॥दिने दिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी॥१३॥नाम्नाकलावती चेति तन्नामकरणं कृतम् ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः ॥१४॥

शुक्लपक्षका चन्द्रमा बढता है, उसी तरह दिनों दिन वह बढने लगी ॥ १३ ॥ उसका "कलावती" नामसे नामकरण किया, एक दिन लीलावती अपने पतिसे मधुर वचन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोली ॥ १४ ॥ कि पहले संकल्प किये व्रतको क्यों नहीं करते हैं, तब साधु वैश्य बोला कि हे प्रिये। इस कन्याके विवाहके समय व्रत करेंगे ॥ १५ ॥ ऐसे, अपनी स्त्री को आश्वासन देकर नगरको गया, और कलावती कन्या पिताके घरमें बढने लगी

न करोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पितं व्रतम् ॥ साधुरुवाच ॥ विवाहसमये त्वस्या करिष्यामि व्रतं प्रिये ॥ १५ ॥ इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति ॥ ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि ॥ १६ ॥ दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह ॥ मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित् ॥ १७ ॥

॥ १६ ॥ एक दिन साधु वैश्यने नगरमें सखियोंके साथ कन्याको देखा, और धर्मको जानने वाले उसने बहुत शीघ्र विचार करके दूतको भेजा ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस कन्याके विवाहके लिये श्रेष्ठ वरका विचार करो" इस प्रकार उसकी आज्ञाको प्राप्त करके वह दूत कांचन नामके नगरको गया ॥१८॥ वहांसे एक वैश्यके पुत्रको लेकर वहां आया, अत्यन्त गुणवाले सुन्दर उस वैश्य पुत्रको देखकर ॥ १९ ॥ भाई बन्धुओंके

विवाहार्थं च कन्यायाः वरं श्रेष्ठं विचारय॥तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ कांचनं नगरं ययौ ॥१८॥ तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः ॥ दृष्ट्वा तु सुंदरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम् ॥१९॥ ज्ञातिभिर्बन्धुभिः सार्धं परितुष्टेन चेतसा ॥ दत्तवान्साधु पुत्राय कन्यां विधिविधानतः ॥ २० ॥ ततोऽभाग्यवशात्तेन विस्मृतं व्रतमुत्तमम्॥विवाहसमये तस्यास्तेनरुष्टोऽभवत्प्रभुः॥२१॥

सहित संतुष्ट चित्तसे साधु वैश्यने विधि पूर्वक उस कन्याका विवाह उस वैश्य पुत्रके साथ कर दिया॥२०॥ दुर्भाग्यसे सत्यनारायणके व्रतको फिर भूल गया, इससे कन्याके विवाहके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समय सत्यनारायण भगवान् रुष्ट होगये ॥ २१॥ कुछ दिनोंके बाद अपने कार्यमें चतुर वह साधु वैश्य अपने दामादको लेकर व्यापारके लिये गया ॥२२॥ और समुद्रके किनारेसे सुन्दर रत्नसारपुरमें जाकर लक्ष्मीवान् दामादके साथ व्यापार किया ॥ २३ ॥ वे दोनों

ततःकालेनकियता निजकर्मविशारदः ॥ वाणिज्यायगतःशीघ्रं जामातृसहितो वणिक् ॥२२॥ रत्नसारपुरे रम्ये गत्वासिन्धुसमीपतः ॥ वाणिज्यमकरोत्साधुर्जामात्रा श्रीमता सह ॥ २३॥ तौ गतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च॥एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः॥२४॥ भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान्॥दारुणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यति ॥२५॥

चन्द्र केतु राजाके नगरमें गये, उसी समयमें सत्यनारायण प्रभुने ॥ २४ ॥ उसको भ्रष्ट प्रतिज्ञा देखकर उसको शाप दिया कि, इसको महा दारुण कठिन दुःख होगा ॥ २५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक दिन राजाके धनको लेकर चोर जहां ये वैश्य ठहरे थे, वही आया ॥ २६ ॥ और अपने पीछे दौडते आते हुए दूतोंको देखकर भयभीत चित्तसे धनको वहीं रखकर शीघ्र ही

एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः ॥ तत्रैव चागतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ ॥ २६ ॥ तत्पश्चाद्धावकान्दूतान्दृष्ट्वा भीतेन चेतसा ॥ धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः ॥२७॥ ततो दूतः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक् ॥ दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वाऽऽनीतौ वणिक्सुतौ ॥ २८ ॥ हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः ॥ तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो ॥ २९ ॥

अदृश्य हो गया ॥ २७ ॥ उसके बाद वे राजाके सिपाही जहां साधु वैश्य बैठा था वहां आये, और वहां राजाके धनको देखकर उन दोनों वैश्योंको बांधकर राजद्वारको ले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आये ॥ २८ ॥ बडी प्रसन्नतासे दौड़े आये वे राजाके समीप आकर बोले कि, हे प्रभो ! हम दो चोरोंको पकड़ कर लाये हैं, आप देखकर आज्ञा कीजिये ॥२९॥ राजाकी आज्ञासे उन दोनोंको शीघ्र ही खूब बांधकर बिना विचार किये ही बड़े भारी जेलखानेमें डाल

राज्ञाऽऽज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बद्ध्वा तु तावुभौ ॥ स्थापितौ द्वौ महादुर्गे
कारागारेऽविचारतः ॥ ३० ॥ मायया सत्यदेवस्य न श्रुतं कैस्तयोर्वचः ॥
अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चंद्रकेतुना ॥ ३१ ॥ तच्छापाच्च तयोर्गेहे भार्या
चैवातिदुःखिता ॥ चौरेणापहृतं सर्वं गृहे यच्च स्थितं धनम् ॥ ३२ ॥

दिया ॥ ३० ॥ सत्यनारायणकी मायासे उनकी बातोंको किसी ने भी नहीं सुना, और चन्द्रकेतु राजाने उनका धन छीन लिया ॥ ३१ ॥ उस शापसे उनके घरमें स्त्री भी बहुत दुःखी हुई, और घरमें जो कुछ धन था; उसको चोर ले गये ॥ ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरीरमें पीडा मनमें चिन्ता, भूखी प्यासी अति दुःखी अन्नकी चिन्ता करती हुई घर घरमें घूमने लगी, कलावती कन्या भी इसी तरह दिन भर घूमने लगी ॥ ३३ ॥ एक

आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपासादिदुःखिता ॥ अन्नचिंतापरा भूत्वाबभ्राम
च गृहे गृहे ॥ कलावती तु कन्याऽपि बभ्राम प्रतिवासरम् ॥ ३३ ॥ एक-
स्मिन्दिवसे याता क्षुधार्ता द्विजमन्दिरम् ॥ गत्वाऽपश्यद् व्रतं तत्र सत्य-
नारायणस्य च ॥३४॥ उपविश्य कथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि ॥ प्रसाद-
भक्षणं कृत्वाऽऽययौ रात्रौ गृहं प्रति ॥ ३५ ॥ माता कलावतीं कन्यां कथ-
यामास प्रेमतः ॥ पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते ॥ ३६ ॥

दिन कलावती कन्या महाभूखी किसी ब्राह्मणके घरमें गई, वहां जाकर सत्यनारायणका व्रत देखा ॥ ३४ ॥ वहां बैठकर कथा सुनकर प्रार्थना करती हुई प्रसाद प्राप्त कर रात्रिको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने घरमें गई ॥३५॥ घर जानेपर माता प्रेमसे कलावती कन्याको बोली कि. हे पुत्री ! रातमें कहां रही, तेरे मनमें क्या है ॥ ३६ ॥ यह सुनकर कलावती कन्या मातासे तुरन्त बोली, हे माता ! ब्राह्मणके घरमें मनकी कामनाको पूर्ण करनेवाला व्रत मैंने देखा,

कन्या कलावती प्राह मातरं प्रति सत्वरम् ॥ द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वांछितसिद्धिदम् ॥ ३७ ॥ तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता ॥ सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च ॥ ३८ ॥ व्रतं चक्रे सैव साध्वी बंधुभिःस्वजनैः सह ॥ भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम् ॥ ३९ ॥

और वहीं रही ॥३७॥ ऐसे कन्याके वाक्य सुनकर वह साधु वैश्यकी स्त्री सत्यनारायणका व्रत करनेको उद्यत हुई ॥ ३८ ॥ उस साध्वी स्त्रीने भाई बन्धुओंके साथ व्रत किया और बोली कि मेरे पति और दामाद दोनों अपने घरको आयें ॥ ३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे सत्यनारायण प्रभो! मेरे पति और दामादका अपराध आप क्षमा करनेके योग्य हैं, उसके इस व्रतसे प्रसन्न होकर सत्यनारायण प्रभुने॥४०॥राजाओंमें श्रेष्ठ चंद्रकेतुको स्वप्न दिखाया, और बोले कि दोनों वैश्य कैदियोंको छोड दो॥४१॥ जो धन तुमने इनसे छीना है, वह अभी

अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षंतुमर्हसि ॥ व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः प्रभुः ॥४०॥ दर्शयामास स्वप्नं ही चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम् ॥ बन्दिनौ मोचय प्रातर्वणिजौ नृपसत्तम॥४१॥ देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाऽधुना॥नो चेत्त्वां नाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम् ॥४२॥ एवमाभाष्यराजानं ध्यानगम्योऽभवत्प्रभुः ॥ ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह ॥ ४३ ॥

लौटा दो, यदि नहीं दोगे तो राज्य, धन और पुत्रों सहित तुम्हारा मैं नाश कर दूँगा॥४२॥ राजाको ऐसे कहकर भगवान् की स्वप्न वाणी चुप होगई। उसके बाद प्रातः काल राजाने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वजनोंके साथ ॥४३॥ सभामें बैठकर अन्य लोगोंको स्वप्न कहा, "बंधे हुये दोनों वैश्य पुत्रोंको शीघ्र छोड दो" ॥४४॥ राजाके ऐसे वचन सुनते ही राजपुरुष उन दोनों वैश्योंको

उपविश्य सभामध्ये प्राह स्वप्नं जनं प्रति ॥ बद्धौ महाजनौ शीघ्रं मोचय द्वौ वणिक्सुतौ ४४॥ इति राज्ञो वचः श्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ ॥ समानीय नृपस्याग्रे प्राहुस्ते विनयान्विताः ॥ ४५ ॥ आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबंधनात् ॥ ततो महाजनौ नत्वा चंद्रकेतुं नृपोत्तम् ॥ ४६ ॥

छोड़कर राजाके सामने लाकर बड़ी विनतीसे बोले ॥४५॥ बेडीके बन्धनसे छूटे हुये दोनों वैश्योंको लाये हैं, तब दोनों वैश्य नृप श्रेष्ठ चन्द्र केतुको नमस्कार करके ॥ ४६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्व वृत्तान्तको स्मरण कर भयसे विह्वल हुये कुछ बोले नहीं, राजा वैश्योंको देखकग बड़े आदरसे वचन बोला॥४७॥प्रारब्धसे यह दुःख तुमको हुआ है, अब भय नहीं है, और फिर राजाने उनकी बेड़ियां हटवाकर क्षौर (हजामत) करवाई ॥४८॥ वस्त्र और गहने देकर प्रसन्न

स्मरंतौ पूर्ववृत्तांतं नोचतुर्भयविह्वलौ॥ राजावणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः प्रोवाच सादरम् ॥४७॥ दैवात्प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम्॥ तदा निगड-संत्यागं क्षौरकर्माद्यकारयत् ॥ ४८ ॥ वस्त्रालंकारकंदत्त्वा पारितोष्य नृपश्च तौ ॥ पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसातोषयद्भृशम् ॥४९॥ पुरानीतं तुयद्द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान्॥ प्रोवाच तौ ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम्५०

करके पुरस्कृत किया और वाणीसे अत्यन्त सन्तोष कराया॥४९॥पहिले इनका जो धन छीन लिया था, वह दुगुना करके दिया, और तब राजाने कहा हे साधो! अब अपने घरको जाओ५०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब वे राजाको प्रणाम करके बोले कि आपकी कृपासे हम जायेंगे, ऐसा कहकर अपने घरको गये ॥ ५१ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गत रेवाखण्डस्थ सत्यनारायण कथा हिन्दी

राजानं प्रणिपत्याह गंतव्यं त्वत्प्रसादतः ॥ इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति ॥ ५१ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ सूत उवाच ॥ यात्रां तु कृतवान् साधुर्मङ्गलायनपूर्विकाम् ॥ ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरं ययौ॥१॥

टीकामें तृतीय अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ सूतजी बोले कि साधु वैश्यने मङ्गलायन पूर्वक यात्रा की, ब्राह्मणोंको धन देकर अपने नगरको गया ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जब वह साधु वैश्य कुछ दूर गया, तब सत्यनारायण प्रभु उसके मनकी बात जाननेकी इच्छासे दण्डी स्वामीका रूप धर कर उसे बोले कि तुम्हारी नावमें क्या है ? ॥२॥ तब मदान्ध हुए वे वैश्य उनका आदर करके हँसकर बोले कि हे दंडिन्! कैसे पूछते हो, क्या कुछ

कियद्दूरं गते साधौ सत्यनारायणः प्रभुः ॥ जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम् ॥ २ ॥ ततोमहाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै ॥ कथं पृच्छसि भो दण्डिन् मुद्रां नेतुं किमिच्छसि ॥ ३ ॥ लता पत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम ॥ निष्ठुरं च वचः श्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः ॥ ४ ॥

रुपये लेनेकी इच्छा है ? ॥ ३ ॥ परन्तु मेरी नावमें लतापत्रादिक हैं । ऐसे निठुर वचन सुनकर सत्यनारायण बोले कि "तुम्हारा वचन सत्य हो" ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐसा कहर शीघ्र ही वह दण्डी उसके पाससे चला गया, और समुद्रमे कुछ दूर जाकर बैठ गया ॥५॥ जब वह दंडी चला गया तब साधु नित्य क्रिया करके अपनी नावको बहुत हलकी उठी हुई चलती देखकर बड़ा चकित हुआ ॥ ६ ॥ और उस नावमें लतापत्रादिक

एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः॥ कियद्दूरे ततो गत्वा स्थितः सिन्धुसमीपतः ॥५॥ गते दंडिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा ॥ उत्थितां तरणिं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ ॥ ६ ॥ दृष्ट्वा लतादिकं चैव मूर्च्छितोन्यपतद्भुवि॥लब्धसंज्ञोवणिक्पुत्रस्ततश्चिन्तान्वितोऽभवत्॥७॥ तदा तु दुहितुः कान्तो वचनंचेदमब्रवीत्॥ किमर्थं क्रियते शोकःशापो दत्तश्च दंडिना ॥८॥

देखकर मूर्च्छित होकर भूमिमें गिर पड़ा,थोडी देरमें सावधान हुआ तो बहुत चिन्तित हुआ ॥७॥ तब उसका दामाद बोला कि क्यों शोक करते हो, यह शाप दण्डीने दिया है ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह दण्डी सब कुछ करनेमें समर्थ है, आप उसकी शरणमें चलें, तो मन वांछित फल पूरा होगा ॥९॥ दामादके ऐसे वचन सुनकर उसके पास गया, और दण्डीको देखकर प्रणाम करके बड़े आदरसे बोला ॥१०॥ हे स्वामिन्! मैंने जो आपके सामने कहा, मेरे

शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं चात्र न संशयः॥अतस्तच्छरणंयामो वाञ्छितार्थो भविष्यति ॥९॥ जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा॥ दृष्ट्वा च दंडिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम् ॥१०॥ क्षमस्व चापराधं मे तदुक्तं तव सन्निधौ ॥ एवं पुनःपुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत् ॥११॥ प्रोवाचवचनं दण्डी विलपन्तं विलोक्य च॥मा रोदीः शृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः ॥१२॥

उस अपराधको क्षमा करिये, ऐसे बारम्बार नमस्कार करके महाशोकसे व्याकुल हुआ ॥११॥ उसको विलाप करता हुआ देखकर दण्डी बोले कि रोओ मत, मेरा वचन सुनो,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम मेरी पूजासे बहिर्मुख हो ॥ १२ ॥ हे दुष्ट बुद्धिवाले ! मेरी आज्ञासे तुमको बार बार दुःख मिला, भगवान् के ऐसे वचन सुनकर स्तुति करने लगा ॥ १३ ॥ साधु वैश्य बोला-हे प्रभो ! आपकी मायासे मोहित हुये ब्रह्मादिक देवता गण भी आपके आश्चर्य-

ममाज्ञया च दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः ॥ तच्छ्रुत्वाभगवद्वाक्यं स्तुतिं कर्तुं समुद्यतः ॥१३॥ साधुरुवाच॥त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः नजानंति गुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो ॥ १४ ॥ मूढोऽहंत्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया ॥ प्रसीद पूजयिष्यामि यथा विभवविस्तरैः ॥ १५ ॥

कारी रूप और गुणों को नहीं जानते हैं ॥ १४ ॥ मैं मूर्ख हूँ आपकी मायासे मोहित हूँ, भला फिर आपको कैसे जान सकता हूँ, आप प्रसन्न होइये, मैं यथा वैभव विस्तारसे आपकी पूजा करूँगा ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पहिले जैसा धन था वैसा ही कीजिये, मैं आपकी शरणमें आया हूँ, मेरी रक्षा करिये, ऐसे भक्तिके वाक्य सुनकर जनार्दन बहुत प्रसन्न हुये ॥ १६ ॥ उसको वांछित वर देकर श्रीविष्णु वहीं अन्तर्धान हो गये, उसके बाद वह वित्तसे भरी हुई नावको देखकर उस पर

पुरा वित्तं च तत्सर्वं त्राहि मां शरणागतम् ॥ श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः ॥ १६ ॥ वरं च वांछितं दत्त्वा तत्रैवान्तर्दधे हरिः ॥ ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम् ॥ १७ ॥ कृपया सत्यदेवस्य सफलं वांछितं मम ॥ इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि ॥ १८ ॥

सवार हुआ ॥ १७ ॥ "सत्यनारायणकी कृपासे मेरा मनोरथ सफल हुआ" ऐसे कह कर स्वजनों सहित साधु वैश्य विधिपूर्वक सत्यनारायणकी पूजा करके ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुत प्रसन्न हुआ, और सत्यनारायणकी कृपासे बड़े यत्नसे नावको चलाने योग्य करके
अपने देशको गया ॥ १९ ॥ साधु वैश्य अपने दामादसे बोला कि मेरी रत्नपुरीको देखो,

हर्षेण चाभवत्पूर्णः सत्यदेवप्रसादतः ॥ नावं संयोज्ययत्नेन स्वदेशगमनं कृतम् ॥ १९ ॥ साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम ॥ दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम् ॥ २० ॥ ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च ॥ प्रोवाच वांछितं वाक्यं नत्वा बद्धांजलिस्तदा ॥ २१ ॥

और अपने धन की रक्षा करने वाले दूतको नगरमें भेजा ॥ २० ॥ वह दूत नगरमें जाकर
साधु की स्त्रीको देखकर हाथ जोड़कर उस समयमें वांछित वाक्य बोला ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नगरके निकट लक्ष्मीवान् साधुवैश्य अपने दामाद, बहुत द्रव्य और बन्धुवर्ग सहित आये हैं २२॥
दूतके मुखसे ऐसे वचन सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई वह सत्यनारायणकी पूजा करके अपनी
पुत्रीसे बोली ॥२३॥ हे पुत्रि जल्दी आओ, मैं तुम्हारे पिताको देखनेके लिये जाती हूँ ऐसे

निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक् ॥ आगतो बन्धुवर्गैश्च वित्तैश्च
बहुभिर्युतः ॥ २२ ॥ श्रुत्वा दूतमुखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती ॥ सत्यपूजां
ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति ॥२३॥ व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्श-
नाय च ॥ इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च ॥२४॥ प्रसादं च परि-
त्यज्य गता सापि पतिं प्रति॥तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा ॥२५॥

माताके वचन सुनकर व्रतको समाप्त करके ॥२४॥ सत्यनारायणके प्रसादको छोड़कर वह
कन्याभी पतिके पास गई, उससे रुष्ट हुये सत्य देवने उसके पतिको तथा नावको ॥२५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रव्यके सहित जलमें डुबा दिया तब कलावती कन्या अपने पतिको नहीं देखकर ॥२६॥
महाशोकसे रोती हुई पृथ्वीपर गिर पड़ी, नावको डूबती हुई और पुत्रीको बहुत दुःखी
देखकर ॥२७॥ भयभीत हुआ "साधु" बोला कि यह क्या आश्चर्य हुआ, वे सब नावको

संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत्॥ ततः कलावतीकन्या न विलो-
क्य निजं पतिम् ॥२६॥ शोकेन महता तत्र रुदती चापतद् भुवि॥दृष्ट्वा तथा
विधां नावं कन्या च बहुदुःखिताम् ॥२७॥ भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्य-
मिदं भवेत्॥चिंत्यमानाश्चते सर्वे बभूवुस्तरणि वाहकाः॥२८॥ततो लीलावती
कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाभवत्॥ विललापातिदुःखेनभर्तारं चेदमब्रवीत्॥२९॥

चलाने वाले भी चिन्ता करने लगे ॥२८॥ तब वह लीलावती भी कन्याको देखकर बहुत
विह्वल हुई, अति दुःखसे विलाप करने लगी और अपने पतिसे बोली ॥ २९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस समय नाव सहित दामाद कैसे अलक्षित हो गया ? न जाने किस देवताकी लीलासे नाव हरली गई ॥३०॥ सत्यदेवके माहात्म्यको कौन जान सकता है, ऐसा कहकर स्वजनों सहित विलाप करने लगी ॥ ३१ ॥ पुत्रीको गोदमें लेकर रोने लगी, कलावती कन्या

इदानीं नौकयासार्धं कथंसोऽभूदलक्षितः ॥न जाने कस्यदेवस्य हेलया चैव सा हृता ॥३०॥ सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुं वा केन शक्यते ॥ इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैःसह ॥३१॥ ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोदह॥ ततःकलावतीकन्या नष्टे स्वामिनिदुःखिता ॥३२॥ गृहीत्वापादुके तस्यानुगतुंचमनोदधे ॥ कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वासभार्यः सज्जनोवणिक् ॥३३॥

स्वामीके नष्ट होनेसे दुःखित हुई ॥ ३२ ॥ उसके खड़ाऊ लेकर मरने की इच्छा की, कन्याके चरितको देखकर स्त्री सहित साधु वैश्य ॥ ३३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मको जानने वाला, अतिशोकसे व्याकुल होकर चिन्ता करने लगा कि, सत्यदेवने हर लिया है, मैं सत्यदेवकी मायासे मोहित हो गया हूँ ॥३४॥ यथा वैभव विस्तारसे सत्यनारायणकी पूजा करूँगा "ऐसे सबको बुलाकर अपना मनोरथ कहा ॥ ३५ ॥ बारम्बार नमस्कार करनेसे

अतिशोकेनसंतप्तश्चिन्तयामास धर्मवित् ॥ हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया ॥ ३४ ॥ सत्यपूजां करिष्यामि यथाविभवविस्तरैः ॥ इति सर्वान् समाहूय कथयित्वा मनोरथम् ॥३५॥ नत्वा च दण्डवद्भूमौसत्यदेवं पुनः पुनः॥ततस्तुष्टः सत्यदेवो दीनानां परिपालकः ॥३६॥ जगाद वचनंचैनं कृपया भक्तवत्सलः॥ त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता ॥३७॥

दीनोंका पालन करनेवाले श्रीसत्यदेव प्रसन्न हो गये ॥ ३६ ॥ भक्तवत्सल कृपा करके यह वचन बोले कि हमारे प्रसादका त्याग करके तुम्हारी कन्या पतिको देखनेको आई ॥ ३७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस कारणसे तुम्हारी कन्याका पति अदृश्य हो गया, यदि वह घर जाकर प्रसाद पाकर आये ॥ ३८ ॥ तो हे साधो ! निश्चय ही इसका पति इसको मिलेगा, तब उस

अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम् ॥ गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा साऽऽयाति चेत्पुनः ॥ ३८ ॥ लब्धभर्त्री सुता साधो भविष्यति न संशयः ॥ कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमण्डलात् ॥ ३९ ॥ क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा ॥ सा पश्चात पुनरागम्य ददर्श सुजनं पतिम् ॥ ४० ॥

कन्याने आकाशसे ऐसी वाणी सुनकर ॥ ३९ ॥ तत्काल ही घर जाकर प्रसाद पाया, और फिर वापस आकरके अपने सज्जन पतिको देखा ॥ ४० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब कलावती कन्या अपने पितासे बोली अब घरको चलिये, विलंब क्यों कर रहे हैं ॥ ४१ ॥ कन्याके यह वचन सुनकर वह वैश्यपुत्र साधु प्रसन्न हुआ और विधि विधानसे

ततःकलावती कन्या जगाद पितरं प्रति ॥ इदानीं च गृहं याहि विलम्बं कुरुषे कथम् ॥ ४१ ॥ तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः ॥ पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः ॥ ४२ ॥ धनैर्बन्धुगणैः सार्द्धं जगाम निजमन्दिरम् ॥ पौर्णमास्यां च संक्रान्तौ कृतवान्सत्यपूजनम् ॥ ४३ ॥

सत्यनारायणका पूजन करके ॥ ४२ ॥ भाई बन्धु और द्रव्य सहित अपने घरको गया और उसने पूर्णमासी और संक्रान्तिको सत्यनारायणका पूजन किया ॥ ४३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस लोकमें सुख भोगकर अवैष्णवोंके लिये अप्राप्य, मायाकृत तीनों गुणोंसे रहित, सत्यनारायणके श्रीवैकुण्ठलोकको गया ॥ ४४ ॥ इति श्रीस्कन्द पुराणान्तर्गत रेवाखण्डोक्त सत्यनारायण कथा हिन्दी टीकामें चतुर्थ अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ श्रीसूतजी बोले

इहलोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ ॥ अवैष्णवानामप्राप्यं गुणत्रयविवर्जितम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ सूत उवाच ॥ अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः ॥ आसीत्तुङ्गध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः ॥ १ ॥

कि हे श्रेष्ठ मुनियो ! सुनो, और आगे कहते हैं, प्रजापालनमें तत्पर एक तुङ्गध्वज नामक राजा था ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह सत्यनारायणके प्रसादको त्यागने से दुःखको प्राप्त हुआ। एक दिन उसने वनमें जाकर बहुत प्रकारके पशुओंको मारा ॥ २ ॥ और वटके मूलमें आकर सत्यनारायणका पूजन देखा कि महासन्तोषी भक्तियुक्त गोपगण बान्धवों सहित सत्यनारायणका पूजन

प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दुःखमवाप सः ॥ एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान्पशून् ॥ २ ॥ आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम् ॥ गोपाः कुर्वंति संतुष्टा भक्तियुक्ताः सबांधवाः ॥ ३ ॥ राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गत्वा न ननाम सः ॥ ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ ॥ ४ ॥

करते हैं ॥ ३ ॥ राजा देखकर भी गर्वसे न तो पास ही गया, और न प्रणाम ही किया, बादमें गोपगण प्रसाद लेकर राजाके पास ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रख आये और वापस आकर सबने अभीष्ट प्रसाद पाया, और राजा प्रसादको छोड़कर दुःख को प्राप्त हुआ ॥५॥ उसके सौ पुत्र नष्ट हो गये, धन धान्यादिकका भी नाश हो गया, तब उसे निश्चय हुआ कि सत्यनारायणने सब नष्ट कर दिया ॥ ६ ॥ अतः जहां इनका पूजन

संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वे यथेप्सितम् ॥ ततःप्रसादं संत्यज्य राजा दुःखमवाप सः ॥५॥ तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत ॥ सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम्॥६॥अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम्॥मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ ॥७॥ ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजां गोपगणैःसह॥भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकारविधिना नृपः ॥८॥

है, वहीं जाऊँ, ऐसे मनसे विचार करके गोपालोंके पास राजा गया ॥ ७ ॥ और उस राजाने सत्यनारायणका पूजन गोपालोंके साथ भक्ति श्रद्धासे विधिपूर्वक किया ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्यनारायणकी कृपासे उसके फिर धन और पुत्र हो गये, और इस लोकमें सुख भोगकर अन्त
में सत्यनारायणके लोकको गया॥९॥ परम दुर्लभ इस सत्यनारायणके व्रतको जो करता है,
और जो भक्ति पूर्वक फल देनेवाली इस कथाको सुनता है॥ १०॥ उसके सत्यनारायणकी

सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा चांते
सत्यपुरं ययौ ॥९॥ य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्लभम्॥ शृणोति च कथां
पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम् ॥ १० ॥ धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसा-
दतः॥ दरिद्रो लभते वित्तं बद्धो मुच्येत बंधनात्॥ ११ ॥ भीतो भयात्प्रमु-
च्येत सत्यमेव न संशयः॥ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं व्रजेत्॥१२॥

कृपासे धन धान्यादिक सब होजाते हैं, दरिद्रीको धन प्राप्त हो जाता है और बंधनवालेका बन्धन
छूट जाता है॥११॥ डरा हुआ डरसे छूट जाता है यह सत्य है, इसमें कुछ सन्देह नहीं मन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वांञ्छित फल भोगकर वह सत्यनारायणके लोकको प्राप्त होता है ॥१२॥ हे ब्राह्मणो ! यह सत्य नारायणका व्रत हमने तुमसे कहा, इसको मनुष्य करके सब दुःखोंसे छूट जाता है ॥ १३ ॥ विशेष करके कलियुगमें सत्यनारायणकी पूजा फल देनेवाली है, इन

इति व कथितं विप्राः सत्यनारायणं व्रतम् ॥ यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥१३॥ विशेषतःकलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा ॥ केचित्कालं वदिष्यंति सत्यमीशं तमेवच॥१४॥सत्यनारायणं केचित्सत्यदेवं तथापरे ॥ नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदः॥ १५ ॥ भविष्यति कलौ सत्य-व्रतरूपी सनातनः ॥ श्रीविष्णुना धृतं रूपंः सर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १६ ॥

सत्यनारायणको कोई मनुष्य काल कहेंगे, कोई ईश्वर कहेंगे कोई सत्य कहेंगे ॥ १४ ॥ कोई सत्यदेव कहेंगे, कोई सत्यनारायण कहेंगे, अनेक स्वरूप धरकर सबको मन वांछित फल देते हैं ॥ १५ ॥ कलियुगमें सत्य रूपी सनातन सत्यनारायण होंगे और सबको मन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वांछित फल देनेके लिये श्रीविष्णुने यह सत्यनारायणका रूप धारण किया है ॥ १६ ॥
हे मुनिसत्तमो ! जो इसको पढ़े जो नित्य सुने सत्यनारायणकी कृपासे उसके सब पाप नष्ट

य इदं पठते नित्यं शृणोति मुनिसत्तमाः ॥ तस्य नश्यन्ति पापानि सत्यदेवप्रसादतः ॥१७॥ व्रतं यस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च ॥ तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः ॥१८॥ सतानंदो महाप्राज्ञः सुदामा ब्राह्मणो ह्यभूत् ॥ तस्मिन् जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह ॥ १९ ॥

हो जाते हैं ॥ १७ ॥ हे मुनीश्वरो ! श्री सत्यनारायणका व्रत जिन्होंने पहले किया है, उनके पिछले जो जन्म हैं, उनको कहते हैं ॥१८॥ महाबुद्धिमान् शतानन्द ब्राह्मण सुदामानामक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मण हुआ उस जन्ममें श्रीकृष्णजीका ध्यान करके मोक्षको प्राप्त हुआ ॥१९॥ काष्ठको बेचनेवाला भिल्ल गुहराज हुआ जो उस जन्ममें श्रीरामचन्द्रजीकी सेवा करके मोक्षको प्राप्त हुआ ॥ २० ॥ उल्कामुख जो महाराज हैं वे राजा दशरथ हुये अपने इक्ष्वाकुजीके

काष्ठभारवहो भिल्लो गुहराजो बभूव ह ॥ तस्मिञ्जन्मनिसंसेव्य रामं मोक्षं जगाम वै ॥ २० ॥ उल्कामुखो महाराजो नृप दशरथोऽभवत् ॥ श्रीरङ्गनाथं संपूज्य श्रीवैकुण्ठं तदाऽगमत् ॥ २१ ॥ धार्मिकः सत्यसन्धश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत् ॥ देहार्धं क्रकचैश्छित्त्वा दत्त्वा मोक्षमवाप ह ॥ २२ ॥

कुलगुरु श्रीरंगनाथजी की सम्यक् प्रकार पूजा करके श्री वैकुण्ठको गये ॥ २१ ॥ धर्मात्मा सत्य बोलनेवाला साधु वैश्य मोरध्वज राजा हुआ, अपना आधा शरीर आरेसे कटवाकर ब्राह्मणको दान करके मोक्षको प्राप्त हुआ ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुंगध्वज राजा निश्चय करके स्वायंभुवमनु हुआ, सबको श्रीवैष्णव भागवत करके श्रीवैकुण्ठ लोकको गया ॥ २३ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गत रेवाखण्डोक्त सत्यनारायण कथा हिन्दीटीकामें पञ्चम अध्याय समाप्त हुआ ॥५॥ वेदांतरूपी कर्पूरके जो सुवर्णके डब्बारूप,

तुङ्गध्वजो महाराजः स्वायंभुरभवत्किल ॥ सर्वान्भागवतान् कृत्वा श्री वैकुण्ठं तदाऽगमत् ॥ २३ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण-व्रतकथायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ (वन्देवेदांतकर्पूरचामीकरकरण्डकम् ॥ रामानुजार्यमार्याणां चूडामणिमहर्निशम् ॥ १ ॥)

और श्रेष्ठजनोंके शिरोमणिरूप ऐसे रामानुजस्वामीको नित्य हम प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥ शुभम् ॥ इति सत्यनारायणव्रत कथा हिन्दीटीकासमेता समाप्ता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सत्यनारायणजीकी आरती प्रारम्भ

जयलक्ष्मीरमणा श्रीलक्ष्मीरमणा ।। सत्यनारायणस्वामी जनपातक हरणा ।। जय० ।। टेर ।।
रत्नजडित सिंहासन अद्भुतछबिराजै ।। नारदकरतनिराजनघंटाध्वनि बाजै ।। जय० ।। १ ।।
प्रगटभयेकलिकारणद्विजको दरश दिया ।। बुड्ढोब्राह्मण बनकर कंचनमहल किया ।। जय० ।। २ ।।
दुर्बलभीलकठारोजिनपर कृपाकरी ।। चंद्रचूड एकराजा जिनकी विपति हरी ।। जय० ।। ३ ।।
वैश्यमनोरथ पायो श्रद्धातज दीनी ।। सोफलभोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ।। जय० ।। ४ ।।
भावभक्तिके कारण छिन छिन रूपधरचा ।। श्रद्धाधारणकीनी जिनका काज सरचा ।। जय० ।। ५ ।।
ग्वालवालसंगराजा वनमें भक्ति करी ।। मनवाञ्छितफल दीनों दीनदयालु हरी ।। जय० ।। ६ ।।
चढ़तप्रसाद सवायोकदलीफल मेवा ।। धूपदीपतुलसी सं राजीसत देवा ।। जय० ।। ७ ।।
श्रीसत्यनारायणजीकी आरती जो कोई नर गावै।।भणतमनसुखो सम्पति मन वांछित पावै।।जय० ।।८।।

इति श्रीसत्यनाराणजीकी आरती समाप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति

सत्यनारायणव्रतकथा हिन्दीटीकासमेता

समाप्ता

इस पुस्तक की छपाई में उपयोग किया गया कागज भारत सरकार की ओर से कंसेशन रेट में सुलभ किया गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection